तृतीय अध्याय

कमलेश्वर - व्यक्तित्व अेवं कृतित्व

कमलेश्वर का जीवन - परिचय

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का परिचय

कमलेश्वर की फिल्मों का परिचय

कहानीकार कमलेश्वर

कहानी संपादक कमलेश्वर

कहानी आलोचक कमलेश्वर

कमलेश्वर के कृतित्व का परिचय

आज़ादी के बाद प्रमुख साहित्यकारों में कमलेश्वर का नाम खास तौर से लिया जाता है। कमलेश्वर वह शख्स हैं जिन्हें आज हर हिन्दी-प्रेमी जानता है। हिन्दी संसार बुनियादी तौर पर अुनको अेक श्रेष्ठ कहानीकार की हैसियत से ही जानता है। 'सारिका' के ज़रिये हिन्दी कहानी को अेक नया मोड देने का महनीय प्रयास अुनकी रचनाओं ने किया है। वे नयी

कहानी आन्दोलन ले आये और उसे सफल भी बनाया। यों तो कहानी विधा में उन्होंने अपना नाम रौशन कर दिया है, उपन्यास के क्षेत्र में भी वे कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।

कमलेश्वर का जीवन-परिचय

कमलेश्वर का पूरा नाम है - कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना। कभी कभी वे अन्य कई उपनामों से भी लिखा करते हैं। कभी विप्र गोस्वामी नाम से तो कभी हरिश्चन्द्र। कभी सौमित्र सिनहा तो कभी पर्यवेक्षक। आखिर हिन्दी संसार उन्हें 'कमलेश्वर' के नाम से ही जानता है। उनका जन्म ६ जनवरी १९३२ को कटरा, मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। दरअसल उनकी रचनाओं का प्रमुख केन्द्र मैनपुरी ही रहा है। वैसे उनकी प्रारम्भिक शिक्षा मैनपुरी हाईस्कूल तथा गवर्नमेंट हाईस्कूल मैनपुरी में सम्पन्न हुई। उन्होंने सन १९५० में के.पी. इंटर कालिज इलाहाबाद से इंटरमीडियट की परीक्षा पास की। इसके बाद उन्होंने सन १९५४ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास की। उनकी हिन्दी के अलावा भौतिकी रसायन शास्त्र, गणित, अर्थशास्त्र और भूगोल आदि कई विषयों में दिलचस्पी का परिचय भी मिलता है। कमलेश्वर ने अनेकों मुश्किलों से संघर्ष करते हुये अपने साहित्य सर्जन का काम जारी रखा। उन्होंने छोटी-मोटी, कई प्रकारकी नौकरियाँ कीं। शुरु में उन्होंने प्रकाश प्रेस मैनपुरी में प्रूफरीडिंग के साथ साथ स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में लेखन का काम भी जारी रखा। तदुपरान्त उन्होंने पचास रुपये माहवार पर 'बहार' मासिक (इलाहाबाद) पत्रिका के सम्पादन का काम भी किया। अनियमित वेतन पर साइनबोर्ड पेंटिंग का भी काम किया। छोटे, मोटे काम करने में वे कभी हिचकिचाये नहीं। उन्होंने चाय के गोदाम में

अपना नाम बदलकर चौकीदारी की नौकरी भी की। रेडियो स्क्रिप्ट रायटिंग के साथ साथ टेलिविजन में भी स्क्रिप्ट राइटिंग का काम भी किया। उन्होंने 'कहानी' मासिक के संपादन के साथ नअी कहानियाँ, 'अंगित' साप्ताहिक तथा 'सारिका' के सम्पादन का भी काम किया।

कमलेश्वरजीने आकाशवाणी के लिअे लगभग सात सौ स्क्रिप्टस् का लेखन करने के साथ टेलिविजनके लिअे लगभग ढाअी सौ स्क्रिप्टस् का लेखन भी किया। टेलिविजन पर 'पत्रिका' की शुरुआत उनकी अेक और साहित्यिक उपलब्धि है। उन्होंने रानिंग कामेंट्री की शुरुआत भी की। भिवंडी (महाराष्ट्र) में हिन्दू-मुस्लिम - दोनों जातियों में जो संघर्ष छीड़ गया, उसको लेकर टेलिविजन के लिअे उन्होंने अेक अच्छी खासी फिल्म भी बनवायी। 'बांगला मुक्ति संग्राम' के लिअे भी उन्होंने जी जान से कोशिश की। हाल ही में औरंगाबाद में जो दलित साहित्य संमेलन सम्पन्न हुआ, उसकी अध्यक्षता का काम कमलेश्वर ने ही स्वीकार किया था।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का परिचय

दरअसल कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व के बारे में लिखना बेहद ज़ोखिम भरा काम है। उनका व्यक्तित्व स्वयं अपने आप में अेक सशक्त साहित्यकार का व्यक्तित्व रहा है। कमलेश्वर पहले अफ़सानानिगार हैं, बाद में कुछ और। उसके असफानोंने सबसे पहले किसी पर चोट की है तो खुद अफ़सानेपर। सन ५० के आसपास हिन्दी अफ़साना अेक नयी शाहराह की तलाश में ही नहीं था बल्कि अेक नया जनम पाने के लिअे बेताब था। पुनर्जन्म की अिस घड़ी में वह कमलेश्वर का ही कलम था जिसने उसे खुबसूरत दोशीजाओं के रेशमी आँचल की सरसराहट और फ़र्सुदा मुर्दा मर्दों के घेरे से ही आज़ाद नहीं किया बल्कि

फ़िराकेवाराना तंग नज़र वतन परस्ती के तहत बननेवाले रज़अतपसन्द निज़ाम का भी पर्दाफ़ाश किया....''[१]।

कमलेश्वरजी ने अपनी कहानियाँ तथा लघु-अुपन्यास अेक निश्चित वर्ग को केन्द्र मानकर लिखे हैं। अुन्होंने अपने लघु-अुपन्यासों के ज़रिये युगीन समस्याओं को प्रस्तुत किया है। जीवन की यथार्थताओं को अुन्होंने अपनी रचनाओं में वरीयता दी है। राजेन्द्र यादव ने अुनके बारे में लिखा है...'' कमलेश्वर अपना सच नहीं बोलता, मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी का सच जरूर बोल सकता है। अुसके पास ज़बान है और अुसे बात करनी भी आती है। क्योंकि अिसी समय बड़े बड़े ज़बानदार लोग भी चुप हो जाते हैं।''[२]

कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व के बारे में लिखते हुअे मैं अकसर अिस अुलझन में फँस जाता हूँ कि क्या लिखूँ और क्या न लिखूँ। कमलेश्वर जी से मेरी पहली मुलाक़ात 'ट्रेनी जर्नलिस्ट के अिंटरव्यू के सिलसिले में' टाअिम्स ऑफ अिण्डिया' में १९७६ में हुअी थी। शुरू में मैंने जब अुन्हें देखा तो वे अेक दार्शनिकसे लगे। घने लम्बे बाल, आँखों पर सफेद चश्मा, शक्ल पर हमेशा हँसी की झलक। अुनकी बातें करने का तरीका भी कुछ अैसा दिलकश है कि सुननेवाला आदमी फ़ौरन प्रभावित हो जाता है। वे दूसरों की खातिरदारी करने में भी सजग रहते हैं। दरअसल वे बेहद मेहनती आदमी हैं। घण्टों लिखते रहते हैं और घण्टों पढ़ते रहते हैं। कमलेश्वर जी हिन्दी साहित्य का मसीहा बनना बिलकुल पसन्द नहीं करते लेकिन जाने अनजाने बन गये हैं। आपकी 'सारिका' को पाकर हिन्दी साहित्य कृतकृत्य हो अुठा है। तत्कालीन अचेतन कहानी, अकहानी अैसे अनेकों साहित्यिक आन्दोलनों को खत्म करा कर अुन्होंने कहानी को जोंघों के जंगल से छुडाया।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
SARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

दरअसल "अुनका कद नाटा है, आँखें मँसले आकार की, बड़ा और खूबसूरत माथा और भवें, सिर बालों से भरा हुआ और चुस्त-दुरुस्त और मोहक चेहरा"[3]। कमलेश्वर जी अेक अच्छे लेखक, वक्ता, सम्पादक, नेता और आदमी भी हैं। वे बेहद जिद्दी और तल्ख आदमी हैं। अुनकी कलम में अेक जादू हुआ करता है। वास्तव में वे अेक समांतर अदीब है। वे अेक अैसे शख्स हैं जो 'कथनी' और 'करनी' में अेकात्मता बनाअे रखते हैं।

दरअसल कमलेश्वर जी का शुमार साहित्यिक अदिबों में किया जाता है जिन्होंने युग-चेतना और युग - बोध को नया मोड दिया। यही वजह है कि..... "हिन्दुस्तान की तमाम अदबी जुबानों में कमलेश्वर का नाम अिज्जत से लिया जाता है।"[4].....

वास्तव में कमलेश्वर जी के अंदाजे बयां कुछ और ही हैं। वे हिन्दी को जनता की सतह पर ले आये। नयी कहानी के विकास में अुनका अनूठा योगदान रहा है। "वे हिन्दी कहानी को घर की चहार दीवारी से बाहर निकालकर खेत, चौघाल, सडक के फुटपाथ पर ले आये हैं। कमलेश्वर के अफसानों में हमें २० वी सदी के हिन्दुस्तान के मसाअिल की धमक महसूस होती है।"[5]

कमलेश्वर जी अेक साथ कहानीकार - नाटककार - आलोचक और परिक्रमा हैं। वे क्या नही हैं। सब कुछ तो हैं। वे जब गमगीन बन जाते हैं तो आपकी मायूसी किसीसे छिपती नहीं।

कमलेश्वर और अुनकी फिल्में

आजकल फिल्मी दुनिया में जिनका नाम तेजी से अुभर रहा है, वे हैं

कमलेश्वर जी। पहले तो वे अेक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं और बाद में फिल्मकार। कमलेश्वर जी कुछ कहानियोंपर सफल फिल्में भी बनी हैं। फिल्मी दुनिया को अुन्होंनें सर्वथा अेक नया मोड दिया हैं।....वैचारिक धरातल का। ''आज हिन्दी फिल्मों कमलेश्वर अेक अपरिहार्य नाम होने के साथ साथ अेक निश्चित शक्ति भी हैं।''[६]

कमलेश्वर जी ने फिल्मों के लिअे तमाम कथाअें - पटकथाअें और संवाद भी लिखे हैं। भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों की रचनाओं पर सफल फ़िल्में भी बन चुकी हैं। मगर हकीकत ये है कि ये अन्यान्य साहित्यकार फिल्मी दुनिया में लम्बे अंतराल तक टिक नहीं पाये। कमलेश्वर जी फिल्म निर्माण की समस्याओं से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। फिल्म की मजबूरियों को जानते हुअे भी वे लिखते ही रहते हैं। वे अविरत रूप से लिखते ही रहे। वे सही फिल्मों की तलाश में जुट गयें हैं।

आजकल तो चारों ओर कमलेश्वर जी की फिल्मों के खूब चरचे हो रहे हैं। अुनका अपनी भाषा पर जबरदस्त अधिकार है। फ़िल्मी स्क्रिप्ट लिखनेवालों में वे बेजोड हैं। अुनके स्क्रिप्ट पढ़कर आसमान की ओर लगा हुआ दिमाग अेकदम से धरती की सच्चाअियाँ अनुभव करने लगता है। दरअसल वे हिन्दी फ़िल्मों की ताकत हैं। अुनकी अेक और खासियत यह है कि अन्यान्य फ़िल्मी लेखकों की हमेशा सराहना करते रहते हैं। अुनकी फ़िल्मी कहानियों, पटकथाओं, स्क्रिप्ट अेवं संवादों में मौलिकता रहा करती है। अुनकी फ़िल्में निम्नांकित हैं -

मौसम, आँधी, बदनाम बस्ती, फिर भी,
पति, पत्नी और वह, आनंदाश्रम, वही बात,

मृगतृष्णा, राम-बलराम, तुम्हारी कसम,
घडी के दो हाथ आदि।

जिनमें से किसी की कहानी, किसी की पटकथा, किसी के संवाद उन्होंने ही लिखे हैं।

कहानीकार कमलेश्वर

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों में कमलेश्वरजी सर्वथा अग्रणी रहे हैं। एक ऊँचे दर्जे के कहानीकार की हैसियत से उन्हें हिन्दी साहित्य जगत में विशेष ख्याति मिल चुकी है। कमलेश्वरजी मूलतः कहानीकार हैं, बाद में सब कुछ। हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में उनका अपना अन्यतम योगदान रहा है। उनकी कथा यात्रा नयी कहानी से लेकर आज तक बराबर चलती रही है। उसमें अभीतक ठहराव नहीं आ पाया है। नयी कहानी आन्दोलन के दौर में अनेक लेखक उखड गये, मगर कमलेश्वरजी अपने स्थान पर अभी तक बराबर जम गये हैं। नयी कहानी के इस दौर में वे हमेशा आगे ही रहे हैं। उन्होंने बहुत लिखा और बहुत अच्छा लिखा। कमलेश्वरजी की कथा यात्रा १९५४ से लेकर १९७६ तक बराबर जारी रही है। उनकी पहली कहानी है - 'कामरेड' जो एटा के 'अप्सरा' पत्रिका में प्रकाशित हुई है। मगर यह कहानी उनके किसी भी कहानी-संग्रह में नहीं है।

कमलेश्वरजी की श्रेष्ठ कहानियाँ निम्नांकित हैं - राजा निरबंसिया, खोई हुई दिशाएँ, गरमियों के दिन, बयान, मांस का दरिया, नीली झील, बदनाम बस्ती, साँप, लाश, जोखिम, रातें, दूसरे, दिल्ली में एक और मौत, इतने अच्छे दिन आदि। उनके कहानी-संग्रह इस प्रकार हैं -

(१) राजा निरबंसियां

(२) कस्बे का आदमी

(३) खोअी हुअी दिशाअें

(४) मांस का दरिया

(५) ज़िन्दा मुर्दे

(६) बचान

(७) मेरी प्रिय कहानियाँ

(८) कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

अिनके अलावा अन्य छोटी मोटी पत्र-पत्रिकाओं में अुनकी कुछ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। कमलेश्वरजी की ये कहानियाँ समर्थगत सच्चाअियों अेवं परिवेश को प्रस्तुत करती हैं। आमतौर पर अुनकी कहानियों के तीन दौर माने जाते हैं -

१. मैनपुरी - अिलाहाबाद के समय की कहानियाँ

२. दिल्ली के जीवन की कहानियाँ

३. बंबअी आगमन के पश्चात की कहानियाँ

कहानी के बारे में खुद कमलेश्वर जी के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं -

"कहानी लिखना मेरा व्यवसाय नहीं, विश्वास है।....कहानी लिखना मेरे लिअे यातना नहीं है, यातनापूर्ण हैं वे कारण जो मुझे कहानी लिखने के लिअे मजबूर करते हैं.... और यह मजबूरी तभी होती है, जब मेरा अपना संकट दूसरों के संकट से सम्बध्द होकर असह्य हो जाता है... या मेरी अपनी करुणा दूसरों की संवेदना से मिलकर अनात्म हो जाती है...कहानी मुझे औरों से जोडती है, या यह कहूँ कि बहुतों से सम्पृक्त होने की सांस्कारिक स्थिती ही कहानी की शुरुआत है।....नयी कहानी आग्रहों की कहानी नहीं है, प्रवृत्तियों की हो सकती है। और अुसका मूल स्त्रोत है - जीवन का

यथार्थ बोध···कहानी मेरे लिऐ, विचारों और भावना - दोनों को वहन करनेवाली विधा है····कहानी हमें दूसरों से मयाक्रान्ता नहीं करती अुनसे हमें संवेदना और सहबोध के स्तर पर सम्बध्द करती है।····कला के स्तर पर कहानी मेरे लिऐ अेक बहुत कठिन विधा है। हर कहानी अेक चुनौती बनकर सामने आती है और अुसके सब सूत्रों को संभालने में नसें फटने लगती हैं - यह कठिन परीक्षा का समय होता है···।"७

कहानी संपादक कमलेश्वर

'कहानी' मासिक पत्रिका से लेकर 'सारिका' तक कमलेश्वरजीकी अेक लम्बी कहानी यात्रा पायी जाती है। 'संकेत' पत्रिका के भी वे सहयोगी संपादक रहे हैं। दिल्ली से प्रकाशित होनेवाली 'अिंगित' पत्रिका के भी वे संपादक रहे हैं। मगर प्रमुख रूपसे दो पत्रिकाओं - 'नअी कहानियाँ' और 'सारिका' के संपादक बने रहे। कमलेश्वर ने 'नअी कहानियाँ' का सम्पादन १९६२ से १९६५ तक किया। १९६७ के मार्च महिने में अुन्होंने 'सारिका' का संपादकत्व स्वीकार किया। और तब से लेकर १९७८ तक वे 'सारिका' के संपादक बने रहे। अुन्होंने १९७७ से 'सारिका' को 'समयगत सच्चाअियों जन-साहित्य की समांतर पाक्षिकी' बना दिया। अेक तरह से कमलेश्वर ने 'समांतर कहानी आन्दोलन' की बुनियाद डाली। अिसके व्दारा हिन्दी कहानी ने नये नये आयामों को छुआ। विभिन्न भारतीय भाषाओं की कहानियों को प्रकाशित करके 'सारिका' ने भाषाओं के सेतुबंध की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। 'सारिका' ने भारतीय कहानीकारों विश्व की कहानियों से भी परिचित कराया।

अिसके अिलावा कमलेश्वर ने 'सारिका' के कुछ खास विशेषांक भी

निकाले और बिलकुल नये स्तम्भों को भी प्रकाशित कर अपने संपादक - व्यक्तित्व का परिचय दिया। जुदा. के लिखे - गर्दिश के दिन। मोहन राकेश विशेषांक और दुष्यन्त कुमार विशेषांक भी कमलेश्वर ने निकाले। आगे चलकर उन्होंने समान्तर कहानी आन्दोलन की बुनियाद भी डाली। 'समान्तर कहानी आन्दोलन' के इस दौर में कमलेश्वर ने दस विशेषांक भी निकाले। 'सारिका' को उन्होंने समयगत सच्चाइयों और जनसाहित्य की जीवंत पाक्षिकी' बना दिया।

कहानी आलोचक कमलेश्वर

कमलेश्वर नई कहानी के आलोचक भी रहे हैं। 'नई कहानी की भूमिका' नामक अपनी पुस्तक में उन्होंने नई कहानी के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। नई कहानी का अस्तित्व, नई कहानी और आधुनिकता, नई कहानी का रूप बंध आदि महत्वपूर्ण प्रश्नों की 'नई कहानी भूमिका' में चर्चा की गयी है। उनकी 'नई कहानी की भूमिका' पुस्तक नई कहानी की पहचान में महत्वपूर्ण योग देती है। कमलेश्वरने अनेक लेख लिखे हैं। जैसे - अकहानी आन्दोलन, जाँघों के जंगल, कामकला के बचकाने खेल, अैयाश प्रेतों का विद्रोह, वैचारिक कफ़न और ये आज्ञाकारी विद्रोही आदि। यह उनकी अेक लेखमाला ही है। इसके साथ साथ समांतर, सारिका और मेरा पन्ना आदि में उनके आलोचक व्यक्तित्व का [illegible] परिचय मिलता है। उनके इन लेखों में आन्दोलनों का और मसीहाई अंदाज पाया जाता है।

इस प्रकार कमलेश्वरजी हिन्दी के अेक विवादास्पद और अत्यन्त चर्चित साहित्यकार रहे हैं। लघु-उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक और संपादक के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में कमलेश्वरजी ने अपनी अलग इमेज बनायी हैं।

कमलेश्वर के कृतित्व का परिचय

कमलेश्वर और उनकी प्रमुख रचनाएँ

जन्म - ६ जनवरी - १९३२ (मैनपुरी उ.प्र.)

शिक्षा - एम. ए. (इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

कहानी संग्रह -
१. राजा निरबंसिया
२. कस्बे का आदमी
३. मांस का दरिया
४. खोई हुई दिशाएँ
५. व्यान
६. ज़िन्दा मुर्दे
७. मेरी प्रिय कहानियाँ

उपन्यास -
१. एक सड़क सत्तावन गलियाँ
२. डाक्बंगला
३. तीसरा आदमी
४. समुद्र में खोया हुआ आदमी
५. लौटे हुए मुसाफ़िर
६. काली आँधी
७. आगामी अतीत
८. वही बात ('रविवार' पत्रिका कलकत्ता से धारावाहिक रूप में प्रकाशित)

१. 'सुबह, दोपहर और शाम' (साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित)

समीक्षा - १. नअी कहानी की भूमिका
२. नअी कहानी के बाद
३. मेरा पन्ना

नाटक - १. अधूरी आवाज
२. कमलेश्वर के बाल नाटक

यात्रा संस्मरण - १. अधूरी यात्राअें
२. बंगला देश की डायरी
३. चुनावों के दौरान

सम्पादन - १. मेरा हमदम : मेरा दोस्त तथा अन्य संस्करण

समान्तर - १. गर्दिश के दिन

टिप्पणियाँ

१. कमलेश्वर - सं. मधुकर सिंह
पृष्ठ - ३८४
अेक मामूली आदमी - अेक गैरमामूली फ़नकार कमलेश्वर
जो कमल था और पत्थर होकर कमलेश्वर बना
- डॉ. आलमशाह खान

२. कमलेश्वर, श्रेष्ठ कहानियाँ - सं. राजेन्द्र यादव

३. कमलेश्वर - सं. मधुकर सिंह
पृष्ठ - २८७
अेक शक्तिपुंज - कमलेश्वर - दामोदर सदन

४. कमलेश्वर - सं. मधुकर सिंह
पृ. - ३८०
कमलेश्वर - मेरी नजर में - ओम गोस्वामी

५. कमलेश्वर - सं. मधुकर सिंह
पृष्ठ - ३८८
कमलेश्वर - कृष्ण चन्दर

६. कमलेश्वर - सं.- मधुकर सिंह
पृ. ३४४
हिन्दी फिल्मों में कथ्य की तलाश - अेक अप्रकाशित अंश

७. कमलेश्वर - ~~सं. मधुकर सिंह~~ मांस का दरिया
पृष्ठ - ५, ६, ८, ९
कमलेश्वर - 'मांस का दरिया' के आत्मकथ्य से